18. मैसूर राज्य का उत्थान

हैदर अली का उत्थान एवं टीपू सुल्तान

मैसूर में वाड्यार वंश के शासक कृष्णाराज का शासन था। परंतु सत्ता की वास्तविक शक्ति मैसूर के सेनापति देवराज एवं मैसूर के दीवान नंजाराज के हाथों में थी। 1761 मे हैदर ने इनका वध करके मैसूर की सत्ता संभाली।

- वस्तुत हैदर ने 1761 से 1782 तक शासन किया परंतु उसने बादशाह की उपाधि नहीं ली। उसने वाडयार वंश को जीवित रखा तथा मैसूर के प्रशासनिक तंत्र की सुचार-व्यवस्था के लिए 18 केन्द्रीय विभागों की स्थापना की जिसमें से अधि कांश ब्राह्मण के हाथों में थी। आधुनिक काल में हैदर अली ने मुस्लिम शासक होते हुए भी भगवान शिव एवं पावर्ती एवं भगवान विष्णु के अंकन वाले सिक्के जारी किये।

1. प्राचीन भारत में सर्वप्रथम भगवान शिव व उनके आह्न नन्दी वेल तथा त्रिशूल वाले सिक्के कुषाण शासक विमाक डसिसेस।
2. गौड़ नरेश शंशाक ने भगवान शिव मां पार्वती नन्दी वेल त्रिशूल एवं डमरू वाले सिक्के जारी किये।
3. हर्ष के सिक्कों पर भी भगवान शिव एवं मां पार्वती का अंकन हुआ है।
4. मुगल सम्राट अकबर के सिक्कों पर भगवान श्री राम व सील का अंकन हुआ है।
5. सांची के स्तूप का अंकन सातवाहन शाशक सातकर्णी प्रथम के सिक्कों पर अंकन हुआ है।
6. भगवान बुद्ध का अंकन कषाण शाशक कनिष्क के सिक्को पर हुआ है।
7. प्राचीन भारत में सीसा (Pb) अथवा पोटीन के सिक्के सातवाहन वंश के शासकों ने चलाये।

- मैसूर के संदर्भ में प्रमुख राजनीतिक घटनाओं के रूप में चार आंग्ल मैसूर युद्धों का विवरण इस प्रकार है।

प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध (1767-69)

प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध का कारण हैदराबाद निजाम एवं मद्रास प्रेसीडेन्सी की बिटिश सरकार के बीच 1766 में हुई एक संधि थी। जिससे वस्तुत हैदर को विद्रोही मानते हुए उसक मैसूर के अधिकार को चुनौती दी गई थी। तथा हैदराबाद निजाम ने अंग्रेजों को मैसूर की दीवानी के अधिकार सौंप दिये जबकि हैदराबाद निजाम का मैसूर पर कोई नियंत्रण नहीं था। अब अंग्रेज और हैदर के बीच युद्ध की सम्भावना प्रबल हो गई। अब हैदर ने कूटनीति चलते हुए हैदराबाद निजाम और मराठो को अपनी ओर मिला लिया। और अंग्रेजों पर आक्रमण कर दिया। और अंग्रेज पराजित हुए और अंग्रेजों को हैदर से अपमान पूर्ण संधि करनी पड़ी।

द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1780-84)

प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध के दौरान चार अप्रैल 1769 को हुई मद्रास की संधि में हैदर की सैनिक सहायता का वचन दिया था। परंतु जब 1771 में मराठो ने हैदर पर आक्रमण किया तो अंग्रेजों ने हैदर की कोई मदद नहीं की।

- ठीक इसी समय यूरोप में फ्रांस एवं इंग्लैण्ड के उपनिवेश के विरूद्ध स्वतंत्रता संग्राम छिड़ा अत: यहा भारत में भी बिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने फ्रांसीसी बस्तियों पॉडिचेरी महलीपट्टनम एवं माही पर कब्जा कर लिया।
- वस्तुत युद्ध का कारण यह नहीं था कि हैदर फ्रांसीसियों का मित्र था बल्कि माही पर अंग्रेजों का नियंत्रण हैदर के निजी हितों के विरूद्ध था। क्योंकि माही हैदर के प्रभाव क्षेत्र में एक बस्ती थी।
- 1780 में हैदर ने क्रमश: कर्नल वेली तत्पश्चात् ब्रिटिश सेनापति हैक्टर मनरो को पराजित किया।
- इस पराजय के संबंध में अल्फ्रेड लौयल ने लिखा 1780 में अंग्रेजी भाग्य न्यूतम स्थिर पर पहुंच गया था।
- 1781 में केप्टन ऑयरकूट ने हैदर को परास्त किया।
- 1782 में हैदर ने ब्रिटिश कर्नल ब्रेथवेट को पराजित किया।
- 1782 में ही बीमारी से हैदर की मृत्यु हो गई।
- अब हैदर के पुत्र टीपू ने सत्ता संभाली और युद्ध जारी रखा। टीपू ने 1733 में ब्रिगेडियर मैथ्यूज को बन्दी बना लिया। इसी समय बंगाल के नये गर्वनर मैर्काटनी की नियुक्ति हुई। मैर्काटनी ने आते ही 1784 में टीपू से मंग्लौर की संधि कर ली। वस्तत मंगलौर की संधि टीपू की एक कूटनीति सफलता थी। क्योंकि टीपू अंग्रेजों के साथ एक पृथक संन्धि कर सका था और उसने अपने राज्य में कोई महत्वपूर्ण व्यापारिक अधिकार भी प्रदान नहीं किये थे।

चूकि मंग्लोर की संधि भी अंग्रेजों के लिए अपमान जनक थी। अत: बंगाल के गर्वनर जनरल वारेन हेस्टिग्स ने नापसंद किया परंतु उसने कोई कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की।

तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1790-92)

पिट्स इंडिया एक्ट 1784 के तहत ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भारतीय प्रदेशों की विजय न करने को कहा था लेकिन लार्ड कॉनवालिस ने जानबूझकर युद्ध की पहल की और उसने क्रमश बैल्लूर, अम्बूर, मंगलौर आदि पर क्रमश कब्जा करते हुए टीपू की राजधानी श्रीरंगपट्टम पर अधिकार कर लिया। टीपू ने कार्नवालिस का प्रबल प्रतिरोध किया औरसंधि हो गई।

श्री रंगपट्टनम की संधि (मार्च 1792)

यह संधि टीपू के लिए अति अपमान जनक थी। उसने युद्ध के हरजाने के रूप में 3 करोड़ 30 लाख रूपया तथा अपना आधा राज्य ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिया तथा अपने दो बेटे अब्दुल खालिद एवं मोहनुद्वीन (मुईजुद्दीन) को बन्दक के तौर पर कार्नवालिस के पास रखा।

कार्नवालिस ने श्री रंगपट्टनम की संधि के लिए लिखा कि हमने अपने मित्रों को शक्तिशाली बनाये बिना शत्रु को पंगु कर दिया।

टीपू सुल्तान का तीसरा बेटा 'फतह अली हैदर' को बंदक नहीं रख गया।

चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध (1799)

चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध की पृष्ठभूमि में वेल्जली की आक्रामक सामाज्य नीति काम कर रही थी। दूसरी ओर टीपू ने फ्रांसीसियों से नजदीकिया बढ़ाई। और उसने स्वतंत्रता सूचक उपापधि 'नागरिक टीपू' धारण की तथा अपनी राजधानी श्री रंगपट्टम में एक प्रतीक वृक्ष लगाया अब वेल्जली ने टीपू से सहायक संधि स्वीकार करने का प्रस्ताव रखा जिसे टीपू ने इंकार कर दिया। अत: वेल्जली का टीपू पर आक्रमण तथा मई 1799 में टीपू लड़ते हुए मारा गया।

- विजय के उपरांत वेल्जली ने कहा 'कि आज पूर्व का साम्राज्य मेरे कदमों में पड़ा है।'
- टीपू ने कहा शेर की तरह एक दिन जीना बेहतर है वनस्पति भेड़ की तरह लम्बा जीवन जीने के।
- अल्फ्रेड लॉयल ने कहा कि नक्षत्रों की गति टीपू के विरूद्ध ही लड़ती रही।
- टीपू की पराजय का मुख्य कारण उसके डचचधिकारियों मीर सादिक, सैय्यद पूर्णिया एवं कमरूदीन का विश्वास घात था।
- टीपू की मृत्यु के बाद उसके परिवार को वेल्लूर में बंधक बना लिया।
- टीपू की पराजय का मुख्य कारण उसकी सेना में नौ सेना का अभाव था टीपू ने कहा 'मैं अंग्रेजों के थल साधनों को समाप्त कर सकता पर समुद्र को सुखा नहीं सकता।'
- टीपू की आत्म कथा 'तारीख-ए-खुद्दादी' के नाम से प्रसिद्ध है।

लार्ड वेल्जली के बाद बंगाल के गर्वनर जनरल के रूप में (1805) कार्नवालिस की पुन: नियुक्त हुई परंतु उसकी मृत्यु हो गई उसका मकबरा गाजीपुर में है। तत्पश्चात सर जॉर्ज बार्लो (1805-07), लार्ड मिन्टो (1807-13), लार्ड हैस्टिंग्स (1813-23), लार्ड एमहर्स्ट (1823-28) की नियुक्तियां हुई।

लार्ड विलियम वेंटिक

1833 के चार्टर एक्ट के अनुसार अब बंगाल के गर्वनर जनरल को अब भारत का गर्वनर जनरल कहा जाने लगा। इस प्रकार वेटिंक बंगाल का अंतिम तथा भारत का प्रथम गर्वनर जनरल हुआ। वेंटिक का कार्य काल वस्तुत: सामाजिक सुधारों के लिए जाना जाता है। जिनका वितिरण इस प्रकार है-

सती प्रथा का अंत (1829)

राजा राममोहन राय के प्रयासों के चलते 1829 के अधिनियम की धारा संख्या 17 के तहत सती प्रथा को मानव की हत्या के समझ अपराध घोषित कर दिया गया। तथा 1830 में उसे मुम्बई एवं मद्रास प्रेसीडेंसियों में भी लागू कर दिया।

सती प्रथा के संदर्भ में राजा राम मोहन राय का विरोध करने वाले अर्थात् सती प्रथा का समर्थन करने वाले प्रमुख विद्वान राधा कांत हैं।

ठगी प्रथा का अंत (1830)

ठगो के संगठित गिरोह अपने शिकार को ठगने के बाद उसकी बलि चढ़ा देते थे। और इसीलिए ठगो के विरूद्ध सबूत नहीं इकट्ठे किये जा सके। इस कुरीत को दूर करने के लिए वेंटिग ने कर्नल स्लीमैन के नेतृत्व में ठगी प्रथा का अंत कर दिया।

शैक्षिक सुधार

1813 के चार्टर एक्ट में सर्वप्रथम भारतीय शिक्षा के विकास के लिए 1 लाख रूपये प्रति वर्ष खर्च करने की घोषणा की गई।

1833 के चार्टर एक्ट में सर्वप्रथम येाग्यता के आधार पर बिना किसी भेदभाव के भारतीयों की नियुक्त का प्रावधान भी रखा गया था। लेकिन व्यावहारिक रूप में इन अधिनियमों का तात्कालिक प्रभाव शून्य रहे।

1835 में लार्ड वेटिक ने मैकाले के नेतृत्व में एक शिक्षा समिति गणित की। इस शिक्षा समिति के सदस्य विद्वानों में

माध्यम को लेकर मतभेद था। ब्रिसेव बंधु एवं विल्सन जैसे विद्वान चाहते थे कि शिक्षा का माध्यम स्थानीय भाषाएं हो जबकि टेबिलियन एवं राजा राममोहन राय जैसे विद्वान चाहते थे कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी हो। अतत: मैकाले के सुझाव पर विलियम वेटिंक ने अंग्रेजी माध्यम को ही स्वीकार किया।

वेंटिक ने शिक्षा सुधारों के तहत (अधोमुखी निस्यंदन) को लागू करने का प्रयास किया। जिसके अनुसार बड़ो को शिक्षित करना आसान होगा यदि उन्हे शिक्षित किया जाये तो वे छोटों को स्वयं शिक्षित कर देंगे। यह नीति असफल रही। वस्तुत: वेंटिंग की इस शिक्षा नीति का उद्देश्य शिक्षा का प्रसार नहीं था बल्कि वेटिग अंग्रेजी पढ़े लिखे भारतीयो का एक ऐसा वर्ग करना चाहता है जो प्रशासन के निम्न स्तरीय कार्यो को संवादित कर सके।

- मैकाले ने कहा था कि यूरोप के पुस्तकालय की एक अलमारी, पूरे भारत एवं अरब के समस्त साहित्य के बराबर है।
- वेटिंग ने 1835 में कलकत्ता मेडीकल कॉलेज की स्थापना की। यह भारत का प्रथम मेडिकल कॉलेज था।
- वेटिंक के बाद भारत के गर्वनर जनरल के रूप में चार्ल्स मेटकॉफ (1835-36) की नियुक्त हुई। उसने समाचार पत्रों से समस्त प्रतिबंध हटा लिए। इसलिए इसे समाचार पत्रों का मुक्तिदाता कहते हैं।

भारतीय प्रेस का विकास

- 15वीं शदी के मध्य में जर्मनी के जॉन गुटिनवर्ग ने प्रेन्टिग प्रेस का आविष्कार किया।
- कैक्सन ने 1477 में छापाखाना (प्रेन्टिग प्रेस) ब्रिटेन में लगाया।
- भारत में 1550 में गोआ में प्रथम छापाखाना पुर्तगालियों ने लगाया जिसमें प्रथमत: धार्मिक पुस्तक छपती थी। जिनका उपयोग ईसाई मिशनरियां इसाई धर्म के प्रचार में करती थी।
- ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपना पहला प्रिटिंग प्रेस 1664 में मुम्बई में लगाया।
- भारत का पहला समाचार पत्र 1780 में कलकत्ता से जेम्स आंगस्टस हिक्सी ने निकाला समाचार पत्र का नाम था The Bengla Gazzette bl lekpkj dks The Culcutta Generl Advertises भी कहा जाता है।
- ब्रिटिश विरोधी बातो को छापने के कारण यह जप्त कर लिया।
- किसी भारतीय के द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र गंगाधर भट्टाचार्य का द बंगाल गजट (1816)।
- भारतीय राष्ट्रीय प्रेस के संस्थापक राजा राम मोहन राय थे जिनके द्वारा प्रकाशित पत्रों के नाम इस प्रकार है।

1. संवाद कौमुदि (1821) बंगला भाषा में।
2. मिरात उल अखबार (1822) फारसी भाषा में।
3. ब्राह्मीनिकल मैगजीन (1822) अंग्रेजी।
4. समाचार चन्द्रिका (1822)।

- ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र सोम प्रकाश (1858) बंगाली भाषा में, इस संदर्भ में भारत का पहला समाचार पत्र था जिसमें नील उत्पादन में लगे श्रमिक एक कृषकों की समस्याओं पर सर्वप्रथम लेख प्रकाशित किए।
- चूंकि अब भारतीय समाचार पत्र क्रमश: उत्तरोत्तर भारतीयों में राजनीतिक चेतना का भी प्रसार का कार्य करने लगे थे। अत: लार्ड लिटन (1876-80) ने Verha clar prese Act (देशी समाचार पत्र अधिनियम) 1878 पारित किया। यह अधिनियम विशेष तौर पर बंगला भाषा में प्रकाशित होने वाले शब्द अमृत बाजार पत्रिका के लिए बनाया गया था जिसमें लगातार ब्रिटिश विरोध खबरे छपती थी। परंतु रातो-रात यह अंग्रेजी में परिवर्तित हो गया और कार्य वाही नहीं हो सकी। (यह एक्ट केवल भारतीय भाषाओं में प्रकाशिता होने वाले समाचार पत्रो के लिए लागू किया था।)
- अमृत बाजार पत्रिका 1868 मे मोती लाल घोष एवं शिशिर कुमार घोष के द्वारा शुरू किया था।
- वार्नाकुलर एक्ट के द्वारा सर्व प्रथम ईश्वर चन्द्र विद्या सागर के द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र सोम प्रकाश के विरूद्ध कार्यवाही की गई।
- लार्ड रिपन (1880-84) ने 1882 में वर्नाकुलर एक्ट को रद्द कर दिया।
- भारत में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों का विवरण इस प्रकार है-

1. हिन्दू पैट्रियार के सम्पादक क्रिस्टोदास पॉल को भारतीय पत्रकारिता का राजकुमार कहा जाता है।
2. हिन्दी भाषा का प्रथम समाचार पत्र उदण्ड-मार्तण्ड-बाबू जुगल किशोर (1826) कानपुर।
3. Servants of India by श्रीनिवास शास्त्री
   Servants of India Socisty की स्थापना 1908 में गोपाल कृष्ण गोखले ने की थी। (भारत सेवक समाज।)
4. गोपाल कृष्णगोखले के द्वारा सम्पादित समाचार पत्र सुधारक।
5. रफ्त गोफ्तार - दादा भाई नरौजी
   सुलभ समाचार पत्र - केशव चन्द्र सेन

केसरी (मराठी भाषा) - लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

मराठा (अंग्रेजी भाषा) - तिलक

इन्दु प्रकाश - महागोविन्द रानाडे

बंगाली (भाषा बंगाली) - सुरेन्द्र नाथ सेन

यंग इंडिया, नवजीवन, हरिजन - गांधी

अल-हिलाल-विलाल - अब्दलु कलाम आजाद

Independence - मोती लाल नेहरू

तहजीव-उल-अठालाक - सैयद अहमद खान

वन्दे मातरम् - अरविन्द घोष

The People (पंजाब) - लाला लाजपत राय

आधुनिक भारत की प्रमुख पुस्तकें

New lamps for old - श्री अरविन्द घोष

Life divine - श्री अरविन्द घोष

सावित्री (अंग्रेजी का सबसे बड़ा महाकाव्य) - श्री अरविन्द घोष

How India fought for freedom - एनी वेसेन्ट

India: A Nation - एनी वेसेन्ट

एनी वेसेन्ट के दो समाचार पत्र 'New India' and 'Comman wheel' थे।

A nation in making - सुरेन्द्र नाथ बनर्जी

गीतांजलि- रविन्द्र नाथ टैगोर (नोवेल)

Un Happy India - लाला लाजपत राय

Young India - लाला लाजपत राय

Broken wings - सरोजनी नायडू

Song of India - सरोजनी नायडू

तसना ए हिन्द (सारे जहां से अच्छा) - मु. इकबाल

Now or never - चौधरी रहमत अली

India divided - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

India wins freedon - मौलाना अबुल कलाम आजाद

Thoughts or Pakistan - भीमराव अम्बेडकर

Why I am Athieast (मैं नास्तिक क्यों हूं) - भगत सिंह

गीता रहस्य - लोकमान्य तिलक

The aretic heme of the aryans - लोकमान्य तिलक

सत्यार्थ प्रकाश - दयानन्द सरस्वती

Poverty and Unbritish role - दयानन्द सरस्वती

In India (1868) - दादा भाई नौरोजी

The Indian struggle - सुभाष चन्द्र बोस की आत्म कथा

1857 The first war of Indian Independence - दामोदार सावरकर

मेटकॉफ के पश्चात् क्रमशः लॉर्ड आंकलैण्ड (1836-42) लॉर्ड एलन वरो (1842-44), लार्ड हार्डिग (1842-48) हुये।

- लार्ड ऑकलैण्ड ने शेरशाह सूरी मार्ग का पुनर्निर्माण कराया तथाइसका नाम बदलकर जी.टी. रोड रख दिया।
- लार्ड एलनवरो ने 1843 के पूरक एक्ट की धारा 5 से दास प्रथा के पूर्णतः निषिद्ध करते हुए उेस अपराध की श्रेणी में रख दिया।

लॉर्ड डलहौजी (1848-56)

लार्ड डलहौनी एक पक्का साम्राज्यवादी गवर्नर जिसे भारत में सबसे कम उम्र में (मात्र 35 वर्ष की अवस्था में) भारत का गर्वनर जनरल बना कर भेजा गया। डलहौजी को वस्तुत अपनी राज्य हड्प नीति के कारण जाना जाता है। डलहौजी के काल की प्रथम राजनीतिक घटना पंजाब का विलय (1849) थी। चाटर्स नैपियर ने 21 फरवरी 1849 को तोपो के युद्ध में पंजाब के शासक दिलीप सिंह को पराजित करके अपहस्थ कर दिया तथा पंजाब का विलय कर लिया गया पंजाब के विलय को 'एक संगीन विश्वासघात' की संज्ञा दी जाती है।

डलहौजी की राज्य हड़प नीति के तहत देशी रियासतों को दत्तक पुत्र लेने के अधिकार से वंचित कर दिया गया तथा उस राज्य को ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रत्यक्ष नियंत्रण में लाने की बात की गई। इस नीति के तहत विलय किये गये राज्यों में सर्वप्रथम 1848 में सतारा - यहां के शासक अप्पा जी की निसंतान मृत्यु हो गयी। अतः डलहौजी ने सतारा का राज्य हड़प कर लिया तत्पश्चात् क्रमशः

जैतपुर (बुंदैल खण्ड)	1849
संभल पुर (बंगाल)	1849
बघाट (पजाब)	1850
उदैपुर (मध्य प्रदेश)	1852
झांसी (उत्तर प्रदेश)	1853
नागपुर (महाराष्ट्र)	1854 (सबसे अंत में)

का विलय कर लिया गया डलहौजी की राज्य हड़पनीति से ईस्ट इंडिया कम्पनी का राज्य विस्तार साढे तीन गुना बढ़ गया।

कुशासन के आधार पर अवध का विलय (1856)

अवध को डलहौजी ने दुधारू गाय की संज्ञा दी इस समय अवध में वाजिद अली शाह नवाब था तथा अवध में ब्रिटिश

रेजीडेन्ट के रूप में कर्नल स्लीमैन नियुक्त था। डलहौजी ने स्लीमैन से अवध में कुशासन की रिपोर्ट तैयार करने को कहा ताकि अवध का विलय किया जा सके लेकिन स्लीमैन ने इनकार कर दिया अत: डलहौजी ने उसे बर्खास्त करके नये ब्रिटिश रेजीडेन्ट के रूप में आउट्रम की नियुक्त की। आउट्रम की कुशासन की रिपोर्ट पर ही डलहौजी ने अवध का विलय कर लिया इसलिए अवध के विलय को एक महान डकैती की संज्ञा दी जाती है।

डलहौजी के काल में भारतीय रियासतों को शासकों की उपाधियों एवं पेंशन पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। अंतिम पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तकपुत्र घोन्धु पन्त। धुंधूपंत (नाना साहब) की पेंशन बंद कर दी अब नाना साहब ने अजीमुतलाह खान को अपनी पेंशन बहाल करवाने के लिए इंग्लैड भेजा लेकिन वह असफल रही।

डलहौजी के प्रशासनिक सुधार

- डलहौजी ने EIC के तोप खाने का मुख्य कार्यालय कलकत्ता से मेरठ स्थानांतरित कर दिया।
- EIC की सेना का मुख्यालय शिमला में स्थापित किया तथा शिमला को डलहौजी ने ग्रीष्मकालीन घोषित किया (सामान्य तौर पर राजधानी कलकत्ता थी 1912 मे कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित कर दी गयी।) डलहौजी ने शिमला में ही अपने लिए एक विशाल आलीशान महल बनवाया- डलहौजी भवन।
- शैक्षणिक सुधारों के तहत 1853 में थामसन के सुझावों पर भारतीय भाषाओं मे शिक्षा का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया। इसी दौरान 1854 में बोर्ड ऑफ कंट्रोल के अध्यक्ष 'चार्ल्स वुड' का निर्देश पत्र आया जिसमें भारतीय शिक्षा के सुधार के लिए विस्तृत प्रावधानों का उल्लेख किया गया। चार्ल्स वुड के निर्देश पत्र को भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा भी कहते हैं। इन सुझावों के तहत भारत में Anglo – vernacular स्कूलों के स्थापित किये जाने का प्रस्ताव था। जिसमें भारतीय भाषाओं में शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ अंग्रेजी की एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाये जोन की व्यवस्था थी लेकिन ही डचच शिक्षा के लिए अंग्रेजी माध्यम ही स्वीकार किया गया।
- लंदन विश्व विद्यालय की तर्ज पर तीनों प्रेसीडेन्सियों में क्रमश: तीन विश्व विद्यालयों की स्थापना की गई। इसमें सर्वप्रथम कलकत्त विश्वविद्यालय, मुम्बईविश्वविद्यालय, मद्रास विश्वविद्यालय थे ये मुख्यत: परीक्षा लेकर उपाधि प्रदान करने वाली संस्थायें थी। इसमें शैक्षणिक कार्य सम्पन्न नहीं किया जाता था।
- डलहौजी ने कलकत्ता एग्रीकल्चरल यूनीवर्सिटी तथा रूड़की अभियात्रिकी संस्थान (रूडकी इजीनियरिंग कॉलेज की) स्थापना की।
- 1850 के लौम्स लौकी अधिनियम के तहत धर्मान्तरण (ईसाई वन जाने) पर सम्पति का हस्तांतरण वैधानिक घोषित कर दिया अर्थात् अब किसी भी व्यक्ति के ईसाई बन जाने पर उसे उसकी पिता की सम्पति के उत्तराधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता था।

रेलवे मार्ग

भारत की पहली रेलवे लाइन का निर्माण ब्रिटिश कंपनी 'ग्रेट इंडियन येनिन्सुला' द्वारा 1853 में मुंबई से थाणे के बीच सम्पन्न किया गया जिस पर 1853 मे ही भारत की पहली रेलगाड़ी चली इस प्रथम रेल इंजन का नाम था। 'ब्लैक ब्यूटी' मुम्बई से थाणे के बीच की दूरी 20 मील अथवा लगभग 30 किमी. थी।

- वर्तमान में भारत का पहला कार्यरत इंजन 'फेरी क्वीन' हैं जो 1855 में चला था।
- भारत की दूसरी रेलवे लाइन कलकत्ता से रानीगंज के बीच (120 मील), ब्रिटिश कम्पनी ईस्ट इंडियन रेलवे के द्वारा बिछाई गई। वस्तुत भारत में रेलवे के पूर्ण विकास का श्रेय डलहौजी को हैं। डलहौजी की पुस्तक 'Railways Minute' है।
- Father of Indian Railways — रोलेंड सेक डोनाल्ड स्टीफेंसन।

डाक सुधार अधिनियम 1854

- भारतीय डाकघर अधिनियम 1854 के तहत भारत में सर्व प्रथम डाक टिकटों का प्रचलन किया गया। प्रथम डाक टिकट का मूल्य 2 पैसा था। तथा इसी अधिनियम के तहत भारतीय सैनिकों की नि:शल्क डाक सेवा समाप्त कर दी गई।
- भारत में डाक व्यवस्था का संस्थापक रार्बट क्लाइव था जिसने 1766 में डाक प्रणाली का सूत्रपात किया जिसका विस्तार आगे चलकर वारने हेस्टिगन ने 1784 में एक पोस्ट मास्टर जनरल के अधीन कलकत्ता GPO की स्थापना करके किया।

लोक निर्माण विभाग

डलहौजी ने सर्वप्रथम PWD को सैन्य विभाग से प्रथक करके एक अलग विभाग का दर्जा दिया (दिल्ली सल्तनत में

लोव निर्माण विभाग की स्थापना फिरोज-शाह तुगलक ने की थी।)

विधवा विवाह अधिनियम 1856

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के अथक प्रयासों से 1856 में विधवा विवाह को वैधानिक घोषित कर दिया गया। विद्यासागर ने पाराशर संहिता के आधार पर विधवा विवाह को मान्य ठहराया।

डाक व्यवस्था :

1. 1786 में मद्रास GPO 1793 में मुम्बई प्रेसीडेन्सी में एक GPO की स्थापना हुई। 1837 के अधिनियम में तीनों प्रेसीडेन्सियों को पोस्ट ऑफिस संगठन को एक अखिल भारतीय डाक सेवा के रूप में समान आधार पर विनियमित किया।
2. 1854 के भारतीय डाकघर अधिनियम के द्वारा सर्वप्रथम डाक टिकटों का प्रचलन अपने अस्तित्व में आया।
3. वर्तमान में भारतीय डाक सेवाओं को 1898 का भारतीय पोस्ट ऑफिस अधिनियम नियंत्रित करता है।

EduBull.com